अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 18

सर्वेष्वर दयाल सक्सेना की कविता में जीवन-मूल्य
डॉ. अबूसाद अहमद
।ठ.54, मेडीकल कॉलोनी
ए .एम.यू. अलीगढ़-202002

सर्वेष्वर दयाल सक्सेना नई कविता के प्रमुख हस्ताक्षर कवि हैं। उनकी कविता में
नए क्षेत्र के साथ नई दिषा का स्वरूप दिखाई देता है। उनके काव्य में एक ओर ‘काठ की घंटियाँ’, ‘बाँस का पुल’, ‘एक सूनी नाव’ रोमानी भावबोध की कविताएँ हैं। वहीं दूसरी ओर ‘गर्म हवाएँ’, ‘कुआनो नदी’ , ‘जंगल का दर्द’, ‘कोई मेरे साथ चले’ में विद्रोह की भावना को देखा जा सकता है। कविता के ये दोनों रूप उनकी जिं़दगी के जीये हुए क्षण का प्रतिफल हैं।
सक्सेना की कविता में लोक जीवन की त्रासदी को भी देखा जा सकता है। उनका
गहन अनुभव सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करता है। इनकी कविता में जीवन क े अकथित सत्यों को देखा जा सकता है। इनके काव्य में व्यंग्य का चुभता तीखपन है जो हृदय के साथ-साथ हमारे विवेक को भी प्रभावित करता है। बुद्धितत्व उनकी कविता का प्राणतत्व है। इसी बुद्धितत्व को नई कविता में विष्
विकसित होने में सहायक सिद्ध हुई। जगदीष्
वर्ग

को नहीं सहलाया जा सकता, अपितु व्यंग्य के सहारे बुद्धि पर तीखा प्रहार करना पड़ता है।’’1
सर्वेष्वर अपने काव्य में मध्यवर्गीय जनजीवन की स्थिति, समस्या को गहराई से देखते हैं। उसे सूक्ष्मता से परखते हैं। उनका काव्य-चिंतन गतिषील है। जो स्वप्न से सत्य

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 19

के मार्ग पर चलता है। उनके काव्य लेखन में दायित्वपूर्ण कर्म मौजूद है। कु ँवर नारायण े हैं कि ‘‘सर्वेष्वर के काव्य में व्यक्ति की
संवेदना सीमित न होकर सार्वभौमिक है। धरती के किसी कोने पर अन्याय होता दिखाइ Z देता है तो कवि अपने अन्दर तक ताप अनुभव करता है। दरअसल सर्वेष्वर के लिए इंसान से बड़ा कुछ भी नहीं है न ईष्वर न प्रकृति सबका कद उनके यहाँ एक है।’’2
कवि मध्यवर्गीय जन-जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। उनके काव्य में आक्रोष,
ाते हैं।
कवि इन मुसीबतों से निकलकर रास्ता बनाने वालों के पक्ष में खड़ा होता है। जो अपना जीवन प्रसन्नता के साथ व्यातीत करते हैं। उनके काव्य की यही क्षमता पाठक को प्रभावित करती है।
‘काठ की घंटियाँ’ इनका पहला कविता संग्रह है। इसमें एक ओर निराषा, वेदना एवं अवसाद के तत्व दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर सौंदर्यनुभूति भी है। जो व्यक्ति की बेचैनी, पीड़ा, व्यथा जैसे भावों को अभिव्यक्त करती है। कवि इन समस्त परिस्थितियों से जूझता हुआ आषा की किरण को जगाने का प्रयास करता है।
कवि ‘मैंने आवाज़ दी’ नामक कविता में घृणा एव तिरस्कार के अँधेरे को बुझा देता
है। उसे विष्
आवाज़ को नहीं दबा सकती। कोई नफ़रत एवं घृणा का अंधकारमय कफ़न ओढ़कर प्रेम क े प्रकाष को नहीं बुझा सकता है। कवि अकेला नहीं है उसके साथ आत्मविष्वास की रोषनी है-

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 20

‘‘मैंने आवाज़ दी है कोई अभी आयेगा
दीप सिरहाने वही मेरे जला जायेगा।
‘ओ अँधेरे का कफ़न ओढ़ के जाने वाले,
रोषनी देख ले यह गीत वही गायेगा।’’3
कवि ‘अँधेरे का मुसाफिर’ नामक कविता में घोर अँधेरों के बीच साँप की भाँति टेड़े-मेढ़े रास्तों से पास होने वालों की लड़खड़ाहट को महसूस करता है उन्हें अपने स्पर्ष षनी आत्मविष्वास को और बढ़ा देती है
जो उसकी स्थिति को धूमिल नहीं होने देती। इसी बात का उल्लेख करते हुए कवि कहता है -
‘‘यह अँधेरे की पिटारी, रास्ता यह साँप-सा,
खोलने वाला अनाड़ी मन रहा है काँप-सा।
लड़खड़ाने लग गया मैं, डगमगाने लग गया,

ग् ग् ग्

थाम ले कोई किरन की बाँह मुझको थाम ले,
नाम ले कोई कहीं से रोषनी का नाम ले।’’4
कवि जीवन को गतिषील देखना चाहता है। वह खामोषी में आवाज़ सुनना चाहता
है। ठहराव में जीवन कंपन का पक्षधर है। वह चाँदनी को पिघलाकर हवा में तेज़ी लाना चाहता है जिससे हवा तेज़ चले, पर्दा उठे और दरवाज़ा खुल जाए। जिससे उसके भीतर में सर उठाकर

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 21

जीवन व्यतीत कर सकता है। ‘चाँदनी से कहो’ नामक कविता में कवि इसी बिंदु की ओर इषारा करते हुए कहता है-
‘‘चाँदनी से कहो
थोड़ा और पिघले,
हवा से कह दो
चलें कुछ और तेज़।
ताकि पर्दे हिलें,
दरवाजे खुलें

ग् ग् ग्

ताकि मैं, फिर सिर उठाकर गा सकूँ, सींकचे झक-झोरकर चिल्ला सकूँ।’’5 ष, त्रास एवं
घुटन को महसूस करता है। वह निम्नमध्यवर्गीय समाज में आर्थिक एवं राजनीतिक चक्की में दिन-रात पिसता रहता है। कवि व्यक्ति की इस अवस्था का यथार्थ चित्रण करते हुए कहता है -
‘‘मैं कहना चाहता हूँ
यह कायरों का देष है
बौनों के समाज में
घुटनों के बल चलने की षिक्षा देते हैं छोटी चार पाइपों के हिसाब से

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 22

आदमी के बढ़े हुए पैर काटकर
सोचते हैं उसे सुख और आराम दे रहे हैं।’’6
कवि आधुनिक मानव जीवन की विवषता एवं दीनता का यथार्थ चित्रण करता है। उसे व्यक्ति समाज में अधूरा जीवन व्यतीत करना दिखाई देता है। क्योंकि व्यक्ति समाज में घृणा, प्रेम, क्रोध, क्षमा आदि आवेष को व्यक्त करने का कोई अधिकार नहीं रखता है। वह आधुनिक जीवन की विसंगतियों से परेषान है। कवि ‘कैसी विचित्र है जिं़दगी’ नामक कविता में उपर्युक्त भावों का उल्लेख करता है -

जिसके पैर ईष्वर से प्रार्थना करते समय
गिरकर टूट गये हैं।
यह करुणा की मूर्ति है
जिसकी आँखें स्वार्थ की भट्टी के सामने
खड़े रहने से जाती रही है।’’7

जीवन को सुखी बनाता है। दोनों के बीच एक लय का निर्वाह करता है। प्रेम दो आत्माओं का मिलन होता है। इसलिए समाज में विवाह के बंधन को पवित्र माना गया है। ‘मुझे षारा करता है -
‘‘जिस ताप से लय हो जाए
सारा अस्तित्व एक दूसरे में
उससे बचकर

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 23

क्या करुँगा मैं
अपने तुम्हारे लिए
एक दुनिया रचकर।’’8
कवि आने वाले समय में एक नई दिषा तलाष् ुए
लोग दिखाई नहीं देते। वह जगह-जगह पर स्वयं को नीलाम होता देख रहा है। धर्म-ईमान नाम की कोई चीज़ बची नहीं है। लोग एक-दूसरे को बाज़ार का मोल-भाव समझ रहे हैं। ऐसे लोग गंदे, आत्महीन, विकृत तथा खोखल े हैं। कवि उनसे दूर रहने का अवह्ान करता दिखाई देता है -
‘‘मैं जानता हूँ
क्या हुआ तुम्हारी लँगोटी का
उत्सवां में अधिकारियों के
बिल्ले बनाने के काम आ गयी,
और तुम्हारी लाठी?
उसी को टेक कर चल रही
एक बिगड़ी दिमाग डगमगाती सत्ता।’’9
‘‘व्यक्ति जब अनुभव से गुजरता है तब वह अनुभव के संसार को अनजाने ढंग से, अननुमय दिषा में प्रभावित कर देता है और लौटकर स्वयं भी बदल जाता है।’’10 कवि स्वयं को एक कवि मानने को तैयार नहीं है। वह अपने आपको एक काला झंडा समझ रहा है। कवि की यह सामाजिक चेतना प्रतीक के रूप में उभरकर आती है। वह स्वयं को देष तथा

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 24

समाज से तादात्म्य स्थापित कर लेता है। उसका यह मोहभंग ‘धीरे-धीरे’ रूप से देखा जा सकता है -
‘‘मेरे दोस्तों
मैं उस देष का क्या करूँ
जो धीरे-धीरे खाली होता जा रहा है
मेरे दोस्तों
धीरे-धीरे कुछ नहीं होता
सिर्फ मौत होती है।
धीरे-धीरे एक क्रांति-यात्रा

11

देष स्वतंत्र हुआ, परंतु विसंगति कम नहीं हुई। हमेषा से पूँजीपति लोग
षक्षा, संस्कृति, राजनीति आदि क्षेत्रों
में आर्थिक विपन्नता देखी जा सकती है। कवि इस भयावह परिवेष में आर्थिक तंत्र की गिरफ्त को अपने भीतर महसूस करता है। तभी एकाएक वह कह उठता है-
‘‘झाँकियाँ निकलती हैं
ढ़ोंग की विष्वासघात की
बदबू आती है हर बार
एक मरी हुई बात की।’’12
सक्सेना ‘कुआनो नदी’ नामक कविता में ग्राम्य-संवेदना की सषक्त एवं प्रभावषाली क्षमता का बोध कराते हैं। इस कविता में ग्रामीण जीवन का पिछड़ापन, गरीबी, लाचारी,

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 25

आर्थिक स्थिति यथावत बनी रहती है। कवि इस
‘‘बहुत गरीब जिला है वह बस्ती
जहाँ मैंने इसे पहली बार देखा था
मेरे नाना इस नदी में कूद पड़े थे
और निकाल लिए गए थे
जिं़दगी से ऊबकर मर नहीं सके।’’13
कवि समाज की भयावहता से निराष नहीं है बल्कि वह
मष्
ठंडक को गरमाहट में बदलना चाहता है -
‘‘षब्द जिन्हें मै ं बर्फ़ की सिल्लियों पर भी
अकेली चींटी सा चला ले जाता था
अब अंगारों से धधक रहे हैं
उनसे मैं खेल नहीं सकता
ये युद्ध-भूमि में बदल गए हैं।’’14
कवि समाज में धरती से जुड़ा रहना चाहता है। इस पावन धरती की जड़ें उसके रग-रग में समाहित हैं। उसकी पीड़ा और दुख समाज को सुखी देखना चाहता है। कवि षखर पर पहुँचकर ठहर जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
च्ममत त्मअपमूमक त्ममितममक शोध पत्रिका

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
www.shodhpatrika.in Email id:- hindires@gmail.com Page 26

वह समाज में एकता की भावना पर बल देता है। कवि को समाज का विभाजन बिल्कुल

पसंद नहीं है -

नहीं चमकती

निराषा से लड़ता आदमी भी रोषनी देता है

मैं इस रोषनी की

परीक्षा करना चाहता हूँ।’’15

इस प्रकार हम देखते हैं कि कवि का विराट व्यक्तित्व समाज की समस्याओं का

का भाव साफ दिखाई देता है। जो व्यवस्था तंत्र तथा राजनीतिक तंत्र पर व्यंग्य है। उनके

काव्य की व्यापकता सामाजिक चेतना को जन्म देती है। इनके काव्य में सामाजिक

समस्याएँ विष्

उनके काव्य में जीवन-मूल्य यथार्थ के धरातल पर खरा उतरता है।

संदर्भ:

1. गुप्त, जगदीष, नयी कविता: स्वरूप और समस्याएँ, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाषन, काषी, प्रथम
संस्करण-1969, पृ. 120
2. दिनमान, 9-15 अक्टूबर, 1983, पृ. 13
3. सक्सेना, सर्वेष्वर दयाल, कविताएँ - एक, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, प्रथम स ंस्करण -
1978, पृ. 18-19
4. वही, पृ. 22
5. वही, पृ. 58
6. सक्सेना, सर्वेष्वर दयाल, बाँस का पुल, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1963, पृ.
53

Volume 8, Issue3, (July-Sep 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed 'kks/k if=dk

7- ogh] i- 63
8- lDluk] lo"oj n;ky] ,d lwuh uko] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh] izFke laLdj.k&1966] i- 26
9- ogh] i- 109
10- vxokSy] fofiu dekj] veru d i{k e] if=dk] i- 25
11- lDluk] lo"oj n;ky] ,d lwuh uko] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh] izFke laLdj.k&1966] i- 89
12- lDluk] lo"oj n;ky] xeZ gok,] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh] izFke laLdj.k&1969] i- 89
13- ogh] i- 93
14- lDluk] lo"oj n;ky] txy dk nn] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh] izFke laLdj.k&1984] i- 16&17
15- lDluk] lo"oj n;ky] [kqfV;k ij Vxs ykx] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh] izFke laLdj.k&1984] i- 80